



Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities (SGIJSH)

(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)

Website-<https://socialgravity.nobleinkresearch.com/>

Email-editor@socialgravity.nobleinkresearch.com

ISSN Online: 3139-9312

ISSN Print: 3139-9304



माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं विद्यालयी वातावरण की भूमिका

Lokesh Sharma^{1,*}, Dr. Devendra Kumar Bhardwaj^{2,*}

¹ Research Scholar, Department of Education

College of Education, Bilaspur, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, India
(Affiliated to Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India)

² Associate Professor, Department of Education

College of Education, Bilaspur, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, India
(Affiliated to Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India)

*Corresponding Author: devendra22563@gmail.com

Received: 05 July 2026, Revised: 15 August 2026, Accepted: 30 August 2026, Available Online: 18 September 2026

<https://doi.org/10.68219/7p8fx685>

सारांश

माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण अवस्था है, जिसमें उनकी शैक्षिक उपलब्धि अनेक व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होती है। परंपरागत रूप से शैक्षिक उपलब्धि को मुख्यतः संज्ञानात्मक क्षमताओं एवं विषयगत ज्ञान के संदर्भ में देखा जाता रहा है, किंतु समकालीन शैक्षिक विमर्श में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण जैसे गैर-संज्ञानात्मक कारकों के महत्व पर विशेष बल दिया जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की भूमिका का संकल्पनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में उपलब्ध सैद्धांतिक साहित्य तथा पूर्ववर्ती शोध-निष्कर्षों के आधार पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख आयामों—संवेगों की पहचान, संवेगात्मक विनियमन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल—और विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण के प्रमुख घटकों, जैसे विद्यालयीय नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहयोग, संचार, विद्यालय संस्कृति तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, का शैक्षिक उपलब्धि के साथ संभावित संबंध विश्लेषित किया गया है। समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की अपनी भावनाओं को समझने एवं नियंत्रित करने की क्षमता उनके सीखने में संलग्नता, प्रेरणा, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। इसी प्रकार, सकारात्मक, सहयोगात्मक एवं सुरक्षित विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों के सीखने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है। अध्ययन इन

दोनों आयामों को परस्पर संबंधित मानते हुए एक संकल्पनात्मक रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्तिगत स्तर का तथा संगठनात्मक वातावरण को संदर्भगत स्तर का प्रमुख कारक माना गया है। निष्कर्षतः, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं पर केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्तिगत एवं विद्यालयीय दोनों कारकों को समेकित करने वाला दृष्टिकोण अधिक उपयोगी प्रतीत होता है। अध्ययन के निष्कर्ष माध्यमिक शिक्षा में संवेगात्मक अधिगम, सकारात्मक विद्यालय संस्कृति तथा सहायक संगठनात्मक प्रथाओं के विकास की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं और भविष्य में इन संबंधों की अनुभवजन्य जाँच के लिए आधार प्रदान करते हैं।

प्रमुख शब्द: संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक शिक्षा, संवेगात्मक अधिगम, विद्यालय संस्कृति, शैक्षिक उपलब्धि।

1. परिचय

शिक्षा केवल ज्ञान एवं कौशल के अर्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं व्यवहारात्मक विकास को आकार देने वाली एक व्यापक प्रक्रिया है। विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा का चरण विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि इसी अवधि में उनमें आत्म-पहचान, स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक संबंधों, आत्म-नियमन तथा भविष्य से संबंधित आकांक्षाओं का तीव्र विकास होता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल विभिन्न विषयों में अपेक्षित शैक्षिक दक्षताएँ अर्जित करें, बल्कि बदलती शैक्षिक एवं सामाजिक परिस्थितियों के साथ प्रभावी रूप से अनुकूलन भी स्थापित करें। इसलिए माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि को केवल विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता के परिणाम के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है; इसके निर्धारण में अनेक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा विद्यालयीय कारकों की भूमिका को समझना आवश्यक है।

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी के शैक्षिक विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह सामान्यतः किसी निर्धारित अवधि में विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान, समझ, कौशल तथा विषयगत दक्षता को प्रतिबिंबित करती है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्मविश्वास, उच्च शिक्षा की संभावनाओं तथा भविष्य की व्यावसायिक दिशा से संबंधित हो सकती है, जबकि लगातार निम्न उपलब्धि सीखने के प्रति अरुचि, शैक्षिक असंतोष तथा विद्यालय से दूरी जैसी परिस्थितियों को जन्म दे सकती है। परिणामस्वरूप, शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों, अभिभावकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है।

परंपरागत शैक्षिक दृष्टिकोणों में विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता को मुख्यतः बुद्धिलब्धि, स्मृति, तर्कशक्ति, पूर्व ज्ञान तथा अध्ययन-अभ्यास जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं से जोड़ा जाता रहा है। यद्यपि ये कारक सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हैं, किंतु केवल संज्ञानात्मक क्षमता यह पूरी तरह स्पष्ट नहीं करती कि समान बौद्धिक क्षमता रखने वाले विद्यार्थी शैक्षिक परिस्थितियों में अलग-अलग स्तर की उपलब्धि क्यों प्रदर्शित करते हैं। विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, उन्हें नियंत्रित करने, तनावपूर्ण परिस्थितियों से निपटने, दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने तथा सीखने के लिए स्वयं को प्रेरित करने की क्षमता भी उनके शैक्षिक व्यवहार

को प्रभावित कर सकती है। इसी संदर्भ में **संवेगात्मक बुद्धिमत्ता** की अवधारणा शैक्षिक अनुसंधान में विशेष महत्व प्राप्त करती है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता से आशय व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता से है। विद्यार्थी के संदर्भ में यह क्षमता भावनात्मक आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक संबंधों के प्रभावी प्रबंधन के रूप में अभिव्यक्त हो सकती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस अवस्था में वे शैक्षिक दबाव, परीक्षा-संबंधी तनाव, साथियों के प्रभाव, पारिवारिक अपेक्षाओं तथा भविष्य संबंधी अनिश्चितताओं जैसी अनेक परिस्थितियों का सामना करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में संवेगों का प्रभावी प्रबंधन विद्यार्थी को सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्थिर, केंद्रित एवं सक्रिय बनाए रखने में सहायक हो सकता है।

हालाँकि, विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि केवल उसके व्यक्तिगत गुणों से निर्धारित नहीं होती। विद्यार्थी जिस विद्यालयीय वातावरण में सीखता है, वह भी उसके शैक्षिक अनुभवों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। इसी संदर्भ में **विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण** एक महत्वपूर्ण संदर्भगत कारक के रूप में सामने आता है। संगठनात्मक वातावरण से आशय विद्यालय में विद्यमान उन सामाजिक, प्रशासनिक, मनोवैज्ञानिक एवं पारस्परिक परिस्थितियों से है, जिनके अंतर्गत शिक्षक, विद्यार्थी, प्रधानाचार्य तथा अन्य विद्यालयीय सदस्य अपने कार्य एवं संबंधों का निर्वहन करते हैं। विद्यालय का नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, पारस्परिक सहयोग, संचार, निर्णय-निर्माण में सहभागिता, अनुशासन, विद्यालयीय संस्कृति, संसाधनों की उपलब्धता तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसे तत्व विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को आकार देते हैं।

एक सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थियों को ऐसा सीखने का परिवेश प्रदान कर सकता है जिसमें वे स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित, समर्थित तथा विद्यालय समुदाय का महत्वपूर्ण हिस्सा अनुभव करें। इसके विपरीत, अत्यधिक नियंत्रित, असहयोगात्मक या तनावपूर्ण विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों की विद्यालयीय संलग्नता तथा सीखने की प्रेरणा को प्रभावित कर सकता है। अतः शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन में विद्यार्थी के व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक गुणों और उसके विद्यालयीय संदर्भ को अलग-अलग देखने के बजाय दोनों के संभावित अंतर्संबंधों को समझना अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को एक साथ देखने का महत्व इसी बिंदु पर स्पष्ट होता है। एक ओर, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी की व्यक्तिगत भावनात्मक एवं सामाजिक क्षमताओं को प्रतिबिंबित करती है; दूसरी ओर, संगठनात्मक वातावरण वह संदर्भ प्रदान करता है जिसमें इन क्षमताओं का विकास एवं प्रयोग होता है। उदाहरणतः एक विद्यार्थी में आत्म-नियमन और सामाजिक कौशल की क्षमता होने पर भी यदि विद्यालयीय वातावरण अत्यधिक तनावपूर्ण अथवा असहयोगात्मक है, तो उसकी शैक्षिक संलग्नता प्रभावित हो सकती है। इसके विपरीत, सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों को अपनी संवेगात्मक क्षमताओं का रचनात्मक उपयोग करने तथा सीखने में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान कर सकता है। इस प्रकार दोनों कारकों का संयुक्त अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह दृष्टिकोण इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयों से केवल परीक्षा-केंद्रित उपलब्धि की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि उनसे विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित

करने की भी अपेक्षा की जाती है। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, विद्यार्थी कल्याण, सकारात्मक विद्यालय संस्कृति तथा समावेशी एवं सहयोगात्मक सीखने के वातावरण पर बढ़ता हुआ ध्यान इस व्यापक परिवर्तन को दर्शाता है। इस संदर्भ में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत संवेगात्मक क्षमताएँ और विद्यालय का संगठनात्मक संदर्भ किस प्रकार उनकी शैक्षिक उपलब्धि से जुड़े हो सकते हैं।

यद्यपि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, विद्यालयीय वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि पर स्वतंत्र रूप से पर्याप्त विमर्श उपलब्ध है, फिर भी इन दोनों प्रमुख आयामों—व्यक्तिगत संवेगात्मक क्षमता तथा विद्यालयीय संगठनात्मक संदर्भ—को एक संयुक्त वैचारिक ढाँचे में समझने की आवश्यकता बनी हुई है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संदर्भ में इन कारकों की पारस्परिक भूमिका को समझना शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी हो सकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में भूमिका का संकल्पनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण करता है।

इस अध्ययन का केंद्रीय आधार यह है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को केवल उनकी संज्ञानात्मक क्षमता के आधार पर समझने के बजाय व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक संसाधनों तथा विद्यालयीय संदर्भगत परिस्थितियों के परस्पर संबंध के रूप में देखा जाना चाहिए। इसी दृष्टिकोण के आधार पर आगे के खंडों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित साहित्य एवं सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा तथा इन कारकों के मध्य संभावित संबंधों को एक संकल्पनात्मक रूपरेखा के माध्यम से स्पष्ट किया जाएगा।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन शिक्षा एवं शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में लंबे समय से किया जाता रहा है। प्रारंभिक अध्ययनों में शैक्षणिक उपलब्धि की व्याख्या मुख्यतः बुद्धिलब्धि, पूर्व शैक्षिक प्रदर्शन, अध्ययन-अभ्यास तथा संज्ञानात्मक क्षमताओं के आधार पर की जाती थी। समय के साथ यह दृष्टिकोण विस्तृत हुआ और शोधकर्ताओं ने यह स्वीकार किया कि विद्यार्थी की शैक्षणिक सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके भावनात्मक अनुभवों, सामाजिक संबंधों, प्रेरणा तथा उस विद्यालयीय वातावरण से भी प्रभावित होती है जिसमें वह सीखता है। इसी व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण दो महत्वपूर्ण आयामों के रूप में उभरते हैं।

2.1 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की अपनी तथा अन्य व्यक्तियों की संवेगात्मक अवस्थाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में उनका प्रभावी उपयोग करने की क्षमता से संबंधित है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा ने बुद्धिमत्ता की पारंपरिक संज्ञानात्मक अवधारणा को विस्तृत करते हुए यह संकेत दिया कि व्यक्ति की सफलता को समझने के लिए केवल तार्किक एवं बौद्धिक क्षमताओं पर विचार करना पर्याप्त

नहीं है। व्यक्ति किस प्रकार अपनी भावनाओं को समझता है, तनाव का सामना करता है, स्वयं को प्रेरित करता है तथा दूसरों के साथ संबंध स्थापित करता है—ये सभी उसके व्यवहार एवं अनुकूलन को प्रभावित कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व विशेष रूप से स्पष्ट होता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी विकास की ऐसी अवस्था में होते हैं जहाँ शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। परीक्षा, प्रतिस्पर्धा, अभिभावकीय अपेक्षाएँ, साथियों के साथ संबंध तथा भविष्य की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योजनाएँ उनके संवेगात्मक अनुभवों को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में संवेगों को पहचानने और नियंत्रित करने की क्षमता विद्यार्थियों को कठिन परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार बनाए रखने में सहायता कर सकती है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध को समझने के लिए आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन तथा आत्म-प्रेरणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। जो विद्यार्थी अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को पहचानने में सक्षम होते हैं, वे अपनी सीखने की कठिनाइयों और तनावपूर्ण परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से समझ सकते हैं। इसी प्रकार, आत्म-नियमन विद्यार्थी को तत्काल भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के स्थान पर दीर्घकालिक शैक्षणिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता कर सकता है। आत्म-प्रेरणा सीखने के प्रति निरंतर प्रयास, लक्ष्य-निर्धारण और कठिनाइयों के बावजूद कार्य जारी रखने की प्रवृत्ति को मजबूत कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, सहानुभूति और सामाजिक कौशल भी विद्यालयीय जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थियों को प्रतिदिन शिक्षकों, सहपाठियों तथा विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ संवाद करना पड़ता है। प्रभावी सामाजिक कौशल सहयोगात्मक अधिगम, सकारात्मक संबंधों तथा कक्षा में सहभागिता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कर सकते हैं। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव केवल व्यक्तिगत भावनात्मक नियंत्रण तक सीमित न रहकर विद्यार्थी के संपूर्ण विद्यालयीय व्यवहार से जुड़ सकता है। हालाँकि, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध को एक सरल कारण-परिणाम संबंध के रूप में देखना उचित नहीं होगा। विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि अनेक कारकों की संयुक्त परिणति होती है। पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, शिक्षण की गुणवत्ता, अध्ययन के अवसर, विद्यालयीय संसाधन और व्यक्तिगत प्रेरणा जैसे कारक भी इस संबंध को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को शैक्षणिक उपलब्धि का एक संभावित योगदानकारी कारक मानना अधिक उपयुक्त है।

2.2 विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण और शैक्षणिक उपलब्धि

विद्यार्थी का विकास केवल व्यक्तिगत विशेषताओं का परिणाम नहीं होता; वह उस सामाजिक एवं संस्थागत परिवेश से भी प्रभावित होता है जिसमें वह निरंतर सहभागिता करता है। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण इसी व्यापक परिवेश का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इससे विद्यालय में विद्यमान नेतृत्व की प्रकृति, पारस्परिक संबंध, संचार व्यवस्था, सहयोग की भावना, निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाएँ, अनुशासन, विद्यालयीय संस्कृति तथा सदस्यों द्वारा अनुभव की जाने वाली सुरक्षा एवं समर्थन की भावना का संकेत मिलता है।

सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थियों के लिए सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित कर सकता है। जब विद्यार्थी अपने विद्यालय में सम्मानित, सुरक्षित और समर्थित अनुभव करते हैं, तो उनमें विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा सीखने में सक्रिय सहभागिता विकसित होने की संभावना बढ़ती है। इसके विपरीत,

भय, अत्यधिक नियंत्रण, असहयोग या नकारात्मक पारस्परिक संबंधों वाला वातावरण विद्यार्थियों के विद्यालयीय अनुभव को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकता है।

विद्यालयीय नेतृत्व भी संगठनात्मक वातावरण का एक महत्वपूर्ण घटक है। प्रभावी विद्यालय नेतृत्व स्पष्ट दिशा, सहयोगात्मक कार्य-संस्कृति और विद्यार्थियों के कल्याण को प्राथमिकता देने वाली व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित कर सकता है। इसी प्रकार, शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों की गुणवत्ता विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को प्रभावित करती है। सहायक एवं सम्मानपूर्ण शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों में विश्वास और सहभागिता की भावना को मजबूत कर सकते हैं।

विद्यालय में शिक्षक-शिक्षक सहयोग भी अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। जब शिक्षक सहयोगात्मक रूप से कार्य करते हैं, अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं और विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं पर सामूहिक रूप से विचार करते हैं, तो इससे शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता में सुधार की संभावनाएँ बढ़ती हैं। इसी प्रकार, विद्यालय में प्रभावी संचार व्यवस्था प्रशासन, शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने में सहायक हो सकती है।

2.3 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं विद्यालय के वातावरण का पारस्परिक संबंध

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालय के वातावरण को पूरी तरह स्वतंत्र कारकों के रूप में देखना उनके वास्तविक संबंधों को सीमित कर सकता है। विद्यार्थी की संवेगात्मक क्षमताएँ जिस वातावरण में विकसित और प्रयुक्त होती हैं, वह उसके सामाजिक एवं शैक्षणिक व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। इसी प्रकार, विद्यार्थियों की भावनात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ विद्यालय में संबंधों, संचार तथा वातावरण की प्रकृति को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरणतः ऐसा विद्यालय जहाँ विद्यार्थियों को अपनी बात व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, त्रुटियों से सीखने और सहायता प्राप्त करने के अवसर मिलते हैं, विद्यार्थियों में भावनात्मक सुरक्षा की भावना को बढ़ावा दे सकता है। ऐसी परिस्थितियाँ आत्मविश्वास, आत्म-नियमन और सामाजिक कौशल के विकास के लिए अनुकूल हो सकती हैं। इसके विपरीत, ऐसा वातावरण जहाँ विद्यार्थियों की भावनाओं की उपेक्षा की जाती है अथवा असफलता को केवल दंड या आलोचना के संदर्भ में देखा जाता है, उनके भावनात्मक अनुकूलन को चुनौती दे सकता है। इस दृष्टि से विद्यालय को केवल ज्ञान प्रदान करने वाली संस्था के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम-परिसर के रूप में देखना आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के व्यक्तिगत संसाधनों का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि विद्यालय का वातावरण उन संसाधनों के विकास और प्रयोग के लिए संदर्भ उपलब्ध कराता है। दोनों के बीच यह अंतर्संबंध शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

2.4 शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में संयुक्त दृष्टिकोण

साहित्य के समग्र अवलोकन से यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय दोनों स्तरों के कारकों पर विचार करना आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी की आंतरिक क्षमताओं—जैसे भावनात्मक जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा और सामाजिक दक्षता—से संबंधित है, जबकि संगठनात्मक वातावरण विद्यालय में उपलब्ध बाह्य सामाजिक एवं संस्थागत परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है। इन दोनों आयामों को एकीकृत करने पर यह समझ विकसित होती है कि विद्यार्थी की शैक्षणिक

उपलब्धि केवल यह प्रश्न नहीं है कि विद्यार्थी कितना जानता है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि वह अपनी भावनाओं और व्यवहार को किस प्रकार नियंत्रित करता है तथा उसे सीखने के लिए कैसा विद्यालयीय वातावरण उपलब्ध है। इसलिए शैक्षणिक उपलब्धि के अध्ययन में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और संदर्भगत कारकों को परस्पर संबद्ध रूप में देखना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

2.5 साहित्य में विद्यमान अंतर

यद्यपि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालयीय वातावरण दोनों पर पर्याप्त शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक विमर्श उपलब्ध है, फिर भी इनके संयुक्त परिप्रेक्ष्य को माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में समझने की आवश्यकता बनी हुई है। विशेष रूप से ऐसा वैचारिक ढाँचा, जिसमें विद्यार्थी की व्यक्तिगत संवेगात्मक क्षमता और विद्यालय के संगठनात्मक संदर्भ को एक-दूसरे से संबद्ध करते हुए शैक्षणिक उपलब्धि की व्याख्या की जाए, अधिक समग्र समझ प्रदान कर सकता है। इसी प्रकार, उपलब्ध साहित्य में विभिन्न अवधारणाओं की परिभाषाओं, मापन-पद्धतियों तथा संदर्भों में पर्याप्त विविधता दिखाई देती है। इसलिए केवल पूर्ववर्ती अध्ययनों के निष्कर्षों को सूचीबद्ध करना पर्याप्त नहीं है; आवश्यकता इस बात की है कि उनके निष्कर्षों का आलोचनात्मक संश्लेषण किया जाए और यह निर्धारित किया जाए कि किन परिस्थितियों में तथा किन प्रक्रियाओं के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित हो सकते हैं।

इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य किसी नए प्राथमिक आँकड़े का सांख्यिकीय परीक्षण करना नहीं, बल्कि उपलब्ध सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य साहित्य के आधार पर इन दोनों कारकों की संभावित भूमिका को एकीकृत दृष्टिकोण से समझना है। यह दृष्टिकोण आगे प्रस्तुत संकल्पनात्मक रूपरेखा के लिए आधार प्रदान करता है और भविष्य में किए जाने वाले अनुभवजन्य अध्ययनों के लिए संभावित शोध-दिशाओं को स्पष्ट करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य एवं संकल्पनात्मक प्रतिपादन

3.1 अध्ययन की आवश्यकता

माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन की ऐसी विकासात्मक अवस्था से संबंधित है जिसमें उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावनात्मक, सामाजिक तथा व्यवहारात्मक परिवर्तन भी तीव्र गति से होते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे विषयगत ज्ञान अर्जित करने के साथ-साथ अपनी भावनाओं का प्रबंधन करें, शैक्षणिक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहें, साथियों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करें तथा विद्यालय की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करें। इस कारण शैक्षणिक उपलब्धि को केवल बौद्धिक क्षमता अथवा अध्ययन के समय के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं माना जा सकता।

विद्यार्थी का शैक्षणिक अनुभव उस विद्यालयीय संदर्भ से भी निर्मित होता है जिसमें वह प्रतिदिन सीखता है। शिक्षक का व्यवहार, विद्यालयीय नेतृत्व, सहपाठी संबंध, संचार, सहयोग, अनुशासन, सुरक्षा की भावना तथा विद्यालय की समग्र संस्कृति विद्यार्थी के सीखने के अनुभव को प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार शैक्षणिक उपलब्धि को व्यक्तिगत और पर्यावरणीय कारकों के परस्पर संबंध की दृष्टि से देखना अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

इसी संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण का संयुक्त अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के व्यक्तिगत भावनात्मक संसाधनों को अभिव्यक्त करती है, जबकि संगठनात्मक वातावरण उसके सीखने के लिए उपलब्ध सामाजिक एवं संस्थागत संदर्भ को प्रतिबिंबित करता है। इन दोनों आयामों का एकीकृत विश्लेषण यह समझने में सहायता कर सकता है कि विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमताएँ और विद्यालयीय परिस्थितियाँ मिलकर उसके शैक्षणिक अनुभव एवं उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं।

3.2 अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य उपलब्ध सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य साहित्य के आलोचनात्मक विश्लेषण के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की संभावित भूमिका को स्पष्ट करना है।

इस अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि को केवल अंतिम परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित न मानकर विद्यार्थी के व्यापक शैक्षणिक प्रदर्शन के संकेतक के रूप में देखा गया है। इसी प्रकार, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को केवल भावनाओं पर नियंत्रण की क्षमता न मानकर आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक दक्षता जैसे परस्पर संबद्ध आयामों के समूह के रूप में समझा गया है। विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को भी केवल भौतिक सुविधाओं तक सीमित न रखते हुए नेतृत्व, पारस्परिक संबंध, संचार, सहयोग, विद्यालयीय संस्कृति, सहभागिता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसे संस्थागत एवं सामाजिक आयामों के संदर्भ में देखा गया है।

3.3 विशिष्ट उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा एवं उसके प्रमुख आयामों का विश्लेषण करना तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता स्पष्ट करना।
2. विद्यालय के वातावरण की संकल्पना एवं उसके प्रमुख घटकों का विश्लेषण करना तथा विद्यार्थियों के सीखने एवं शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में उनकी भूमिका को स्पष्ट करना।
3. संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संभावित संबंध को उपलब्ध सैद्धांतिक एवं अनुभवजन्य साहित्य के आधार पर समझना।
4. विद्यालय के वातावरण और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संभावित संबंध का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
5. संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा विद्यालयीय वातावरण के पारस्परिक संबंध को विद्यार्थी के सीखने के संदर्भ में स्पष्ट करना।
6. व्यक्तिगत संवेगात्मक कारकों तथा विद्यालयीय संदर्भगत कारकों को एकीकृत करते हुए शैक्षणिक उपलब्धि की व्याख्या के लिए एक संकल्पनात्मक रूपरेखा विकसित करना।

7. माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण के विकास से संबंधित शैक्षिक निहितार्थों को स्पष्ट करना।
8. भविष्य में इन कारकों के संयुक्त प्रभाव की अनुभवजन्य जाँच के लिए संभावित शोध-दिशाओं की पहचान करना।

3.4 अध्ययन के प्रमुख विश्लेषणात्मक प्रश्न

चूँकि वर्तमान अध्ययन प्राथमिक आँकड़ा-संग्रह एवं सांख्यिकीय परीक्षण पर आधारित नहीं है, इसलिए अध्ययन के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित विश्लेषणात्मक प्रश्न निर्धारित किए गए हैं—

- **प्रश्न 1:** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता किस प्रकार महत्वपूर्ण हो सकती है?
- **प्रश्न 2:** संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के कौन-से आयाम विद्यार्थियों के सीखने, प्रेरणा, आत्म-नियमन और शैक्षणिक व्यवहार से अधिक निकटता से संबंधित हो सकते हैं?
- **प्रश्न 3:** विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थियों के सीखने और शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने के लिए किन प्रक्रियाओं के माध्यम से कार्य कर सकता है?
- **प्रश्न 4:** सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहयोगात्मक संस्कृति, प्रभावी नेतृत्व और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसे संगठनात्मक घटक विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं?
- **प्रश्न 5:** संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण को एक संयुक्त ढाँचे में देखने से विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि की अधिक समग्र व्याख्या किस प्रकार संभव होती है?
- **प्रश्न 6:** उपलब्ध साहित्य में इन दोनों कारकों के संयुक्त अध्ययन से संबंधित कौन-से प्रमुख अंतर या शोध-अवसर विद्यमान हैं?

3.5 संकल्पनात्मक प्रतिपादन

प्रस्तुत अध्ययन इस आधारभूत धारणा पर निर्मित है कि विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि को **व्यक्तिगत एवं संदर्भगत कारकों की अंतःक्रिया** के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। इस दृष्टिकोण में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक संसाधनों का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण उस सामाजिक एवं संस्थागत संदर्भ का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें विद्यार्थी अपनी शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन करता है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ सकता है, किंतु यह प्रभाव कई मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के माध्यम से भी अभिव्यक्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, उच्च स्तर की आत्म-जागरूकता विद्यार्थी को अपनी सीखने संबंधी कठिनाइयों को पहचानने में सहायता कर सकती है। आत्म-नियमन उसे ध्यान बनाए रखने, समय का प्रभावी उपयोग करने तथा तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित रहने में सहायता कर सकता है। आत्म-प्रेरणा दीर्घकालिक शैक्षणिक लक्ष्यों के प्रति निरंतर प्रयास को प्रोत्साहित कर सकती है। इसी प्रकार, सहानुभूति और सामाजिक कौशल सकारात्मक सहपाठी एवं शिक्षक संबंधों के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इन प्रक्रियाओं के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के सीखने संबंधी व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण सीखने के लिए उपलब्ध अवसरों एवं परिस्थितियों की

गुणवत्ता को निर्धारित कर सकता है। एक सहयोगात्मक विद्यालयीय संस्कृति विद्यार्थियों को सहभागिता और संवाद के अवसर प्रदान कर सकती है। प्रभावी नेतृत्व स्पष्ट अपेक्षाओं, सहयोग और समर्थन को प्रोत्साहित कर सकता है। सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थी में विश्वास एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न कर सकते हैं। इसी प्रकार, मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित वातावरण विद्यार्थी को प्रश्न पूछने, गलतियों से सीखने और सहायता माँगने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

3.6 प्रस्तावित संकल्पनात्मक संबंध

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित वैचारिक संबंध प्रस्तावित किए जाते हैं—

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता

- आत्म-जागरूकता
- आत्म-नियमन
- आत्म-प्रेरणा
- सहानुभूति
- सामाजिक कौशल
- सीखने में संलग्नता एवं सकारात्मक शैक्षणिक व्यवहार
- शैक्षणिक उपलब्धि

समानांतर रूप से—

विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण

- विद्यालयीय नेतृत्व
- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध
- शिक्षक सहयोग
- प्रभावी संचार
- सहभागिता एवं निर्णय-निर्माण
- मनोवैज्ञानिक सुरक्षा एवं विद्यालयीय संस्कृति
- अनुकूल सीखने का वातावरण
- शैक्षणिक उपलब्धि

इन दोनों मार्गों को एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं माना गया है। इसके बजाय यह प्रतिपादित किया जाता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण परस्पर पूरक संदर्भों का निर्माण कर सकते हैं। सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों की संवेगात्मक क्षमताओं के विकास एवं अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध करा सकता है, जबकि संवेगात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी विद्यालयीय संबंधों एवं सहयोगात्मक गतिविधियों में अधिक प्रभावी सहभागिता कर सकते हैं।

3.7 अध्ययन में कारणात्मक दावे की सीमा

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रस्तुत अध्ययन किसी प्राथमिक आँकड़े पर आधारित सांख्यिकीय परीक्षण नहीं करता। अतः अध्ययन का उद्देश्य यह दावा करना नहीं है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता अथवा संगठनात्मक वातावरण निश्चित रूप से शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि का कारण बनते हैं। इसके बजाय उपलब्ध साहित्य के आधार पर **संभावित संबंधों, व्याख्यात्मक प्रक्रियाओं और सैद्धांतिक संगति** का विश्लेषण किया गया है। यह भेद शोध-पद्धतिगत दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सहसंबंधात्मक अथवा अनुभवजन्य अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों को बिना अतिरिक्त प्रमाण के कारणात्मक निष्कर्षों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। इसलिए वर्तमान अध्ययन में “प्रभाव”, “भूमिका” अथवा “पूर्वानुमान” जैसे शब्दों का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाएगा और जहाँ आवश्यक होगा वहाँ “संभावित योगदान”, “संबंध” तथा “व्याख्यात्मक भूमिका” जैसे अधिक उपयुक्त शब्दों का प्रयोग किया जाएगा।

3.8 संकल्पनात्मक रूपरेखा का आधार

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन एक बहु-स्तरीय दृष्टिकोण का समर्थन करता है, जिसमें विद्यार्थी की शैक्षणिक उपलब्धि को केवल व्यक्तिगत क्षमता का परिणाम न मानकर उसके **व्यक्तिगत संवेगात्मक संसाधनों और विद्यालयीय सामाजिक-संगठनात्मक संदर्भ** के संयुक्त परिणाम के रूप में समझा जाता है।

इस संकल्पनात्मक दृष्टिकोण में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी को अपनी भावनाओं, प्रेरणा और सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आंतरिक संसाधन प्रदान करती है, जबकि सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण उन संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक सामाजिक एवं संस्थागत परिस्थितियाँ उपलब्ध करा सकता है। परिणामस्वरूप, सीखने में संलग्नता, शैक्षणिक प्रेरणा, आत्म-नियमन, विद्यालयीय अपनत्व और सकारात्मक शैक्षणिक व्यवहार जैसी प्रक्रियाएँ विकसित हो सकती हैं, जो अंततः शैक्षणिक उपलब्धि से संबद्ध हो सकती हैं। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन का संकल्पनात्मक प्रतिपादन **“विद्यार्थी की भावनात्मक क्षमता × विद्यालयीय संदर्भ × सीखने की प्रक्रिया → शैक्षणिक उपलब्धि”** के व्यापक दृष्टिकोण पर आधारित है। यही दृष्टिकोण आगे प्रस्तुत साहित्य के आलोचनात्मक संश्लेषण तथा शैक्षिक निहितार्थों के आधार के रूप में कार्य करेगा।

4. सैद्धांतिक एवं संकल्पनात्मक रूपरेखा

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एक जटिल एवं बहुआयामी शैक्षिक परिणाम है, जिसे किसी एक कारक के आधार पर पूर्णतः स्पष्ट नहीं किया जा सकता। विद्यार्थी की संज्ञानात्मक क्षमता, प्रेरणा, आत्म-नियमन, भावनात्मक दक्षता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सहपाठी संबंध, शिक्षक का व्यवहार तथा विद्यालय का व्यापक वातावरण—ये सभी उसके सीखने के अनुभव को अलग-अलग स्तरों पर प्रभावित कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी बहुआयामी दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्तिगत स्तर के तथा विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण को संदर्भगत स्तर के प्रमुख कारक के रूप में देखता है। इस अध्ययन की सैद्धांतिक रूपरेखा का मूल आधार यह है कि **विद्यार्थी और उसका सीखने का वातावरण एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं**। विद्यार्थी अपनी भावनाओं, धारणाओं, प्रेरणाओं एवं सामाजिक क्षमताओं के साथ विद्यालय में प्रवेश करता है, जबकि विद्यालय उसे ऐसे सामाजिक, संगठनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक अवसर उपलब्ध कराता है जिनके भीतर उसकी शैक्षणिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। अतः शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए व्यक्ति और पर्यावरण के बीच संबंध को केंद्र में रखना आवश्यक है।

4.1 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का सैद्धांतिक आधार

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा ने बुद्धिमत्ता के पारंपरिक संज्ञानात्मक दृष्टिकोण को विस्तृत किया। पारंपरिक दृष्टिकोण में बुद्धिमत्ता को मुख्यतः तर्क, समस्या-समाधान, स्मृति और अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं के संदर्भ में देखा जाता था। इसके विपरीत, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता इस बात पर बल देती है कि व्यक्ति अपनी एवं दूसरों की संवेगात्मक अवस्थाओं को किस प्रकार पहचानता, समझता और उनका प्रबंधन करता है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की विभिन्न सैद्धांतिक व्याख्याओं में यद्यपि अंतर पाया जाता है, तथापि अधिकांश दृष्टिकोणों में कुछ सामान्य तत्व दिखाई देते हैं—संवेगात्मक जागरूकता, संवेगों का विनियमन, आत्म-प्रेरणा, सामाजिक समझ तथा प्रभावी पारस्परिक संबंध। शैक्षिक संदर्भ में ये क्षमताएँ इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सीखना केवल सूचना ग्रहण करने की प्रक्रिया नहीं है; इसमें ध्यान, प्रयास, धैर्य, प्रेरणा, असफलता से निपटना और दूसरों के साथ सहभागिता जैसी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित होती हैं।

4.1.1 आत्म-जागरूकता

आत्म-जागरूकता से आशय अपनी भावनाओं, उनकी तीव्रता तथा उनके संभावित कारणों को पहचानने की क्षमता से है। विद्यार्थी यदि यह समझने में सक्षम है कि किसी परीक्षा, विषय या शैक्षणिक परिस्थिति के प्रति वह चिंतित, निराश या उत्साहित क्यों है, तो वह अपनी प्रतिक्रिया को अधिक प्रभावी ढंग से व्यवस्थित कर सकता है। इस प्रकार आत्म-जागरूकता शैक्षणिक व्यवहार के आत्म-निरीक्षण और सुधार के लिए आधार प्रदान कर सकती है।

4.1.2 आत्म-नियमन

आत्म-नियमन विद्यार्थी की अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और व्यवहार को परिस्थितियों के अनुरूप नियंत्रित करने की क्षमता से संबंधित है। सीखने की प्रक्रिया में निराशा, असफलता, कठिन विषय, परीक्षा का दबाव तथा समय की कमी जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं। आत्म-नियमन विद्यार्थी को तात्कालिक नकारात्मक प्रतिक्रिया के स्थान पर अपने दीर्घकालिक शैक्षणिक लक्ष्यों पर ध्यान बनाए रखने में सहायता कर सकता है।

4.1.3 आत्म-प्रेरणा

शैक्षिक उपलब्धि के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक होता है। आत्म-प्रेरणा विद्यार्थी को बाहरी पुरस्कार अथवा दबाव के अभाव में भी शैक्षणिक कार्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने में सहायता कर सकती है। लक्ष्य निर्धारण, धैर्य, प्रयास की निरंतरता तथा कठिनाइयों के बावजूद कार्य करते रहने की क्षमता संवेगात्मक दक्षता के इस आयाम से संबद्ध हो सकती है।

4.1.4 सहानुभूति

सहानुभूति व्यक्ति को दूसरों की भावनाओं और दृष्टिकोणों को समझने की क्षमता प्रदान करती है। विद्यालय में यह क्षमता सहपाठियों तथा शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने में सहायक हो सकती है। सहयोगात्मक अधिगम, समूह-कार्य तथा कक्षा में सहभागिता जैसी गतिविधियों में सहानुभूति की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है।

4.1.5 सामाजिक कौशल

सामाजिक कौशल प्रभावी संवाद, सहयोग, संघर्ष-प्रबंधन तथा सकारात्मक संबंध निर्माण से संबंधित हैं। विद्यालयीय संदर्भ में विद्यार्थी लगातार सामाजिक अंतःक्रियाओं में संलग्न रहते हैं। इसलिए सामाजिक रूप से सक्षम विद्यार्थी सहयोगात्मक अधिगम, शिक्षक से सहायता प्राप्त करने तथा सहपाठियों के साथ शैक्षणिक सहभागिता में अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

4.2 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और सीखने की प्रक्रिया

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। यह संबंध कई मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के माध्यम से अभिव्यक्त हो सकता है। उदाहरण के लिए, बेहतर भावनात्मक विनियमन विद्यार्थी को तनाव से निपटने में सहायता कर सकता है; तनाव का बेहतर प्रबंधन ध्यान और अध्ययन में निरंतरता को बनाए रखने में योगदान कर सकता है; और बेहतर अध्ययन-संबंधी व्यवहार शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित हो सकता है। इसी प्रकार, संवेगात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी अपनी शैक्षणिक कठिनाइयों को व्यक्तिगत असफलता के रूप में देखने के बजाय उन्हें सुधार के अवसर के रूप में ग्रहण कर सकता है। इससे समस्या-समाधान की प्रवृत्ति, प्रयास की निरंतरता और सीखने में संलग्नता को बढ़ावा मिल सकता है। इस दृष्टि से संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को केवल “भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता” के रूप में नहीं, बल्कि **सीखने के लिए आवश्यक आत्म-नियामक एवं सामाजिक संसाधनों के समूह** के रूप में समझना अधिक उपयोगी है।

4.3 विद्यालय के वातावरण का सैद्धांतिक आधार

विद्यालय एक औपचारिक संस्था होने के साथ-साथ एक सामाजिक समुदाय भी है। इसमें प्रशासन, शिक्षक, विद्यार्थी तथा अन्य हितधारक निरंतर अंतःक्रिया करते हैं। विद्यालय का वातावरण इन अंतःक्रियाओं, साझा मान्यताओं, नेतृत्व-व्यवहार, संचार, सहयोग, नियमों तथा संस्थागत प्रक्रियाओं से निर्मित होता है। वातावरण की प्रकृति यह निर्धारित कर सकती है कि विद्यार्थी विद्यालय को किस प्रकार अनुभव करते हैं। यदि विद्यालय में सम्मान, समर्थन, निष्पक्षता, सहयोग और सुरक्षा की भावना विद्यमान है, तो विद्यार्थी विद्यालय को सीखने के अनुकूल स्थान के रूप में अनुभव कर सकते हैं। इसके विपरीत, भय, अविश्वास, अत्यधिक नियंत्रण अथवा असहयोगपूर्ण संबंध विद्यार्थियों के विद्यालयीय अनुभव को प्रतिकूल बना सकते हैं।

4.4 विद्यालयीय नेतृत्व

विद्यालयीय नेतृत्व संगठनात्मक वातावरण के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाता है। विद्यालय प्रमुख द्वारा निर्धारित प्राथमिकताएँ, निर्णय-निर्माण की शैली, शिक्षकों के प्रति सहयोग, विद्यार्थियों के कल्याण के प्रति संवेदनशीलता तथा विद्यालय के विकास की दिशा संगठनात्मक संस्कृति को प्रभावित कर सकती है। सहभागितापूर्ण और सहयोगात्मक नेतृत्व शिक्षकों को निर्णय-निर्माण में योगदान देने के अवसर प्रदान कर सकता है। इसके परिणामस्वरूप विद्यालय में साझा उत्तरदायित्व और सहयोग की भावना विकसित हो सकती है। ऐसी संस्कृति अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के लिए अधिक सकारात्मक शिक्षण-अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकती है।

4.5 शिक्षक-विद्यार्थी संबंध

विद्यालयीय वातावरण का सबसे प्रत्यक्ष आयाम शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंध है। शिक्षक केवल विषय-वस्तु के प्रदाता नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के लिए सामाजिक एवं भावनात्मक संदर्भ भी निर्मित करते हैं।

शिक्षक का सम्मानपूर्ण व्यवहार, विद्यार्थियों की बात सुनना, उचित मार्गदर्शन देना तथा त्रुटियों को सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा मानना विद्यार्थियों में विश्वास और सहभागिता की भावना को बढ़ा सकता है। जब विद्यार्थी शिक्षक से प्रश्न पूछने या कठिनाई साझा करने में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है, तो उसकी सीखने की प्रक्रिया अधिक सक्रिय हो सकती है। इसके विपरीत, अत्यधिक आलोचनात्मक या भय-आधारित संबंध विद्यार्थी को अपनी कठिनाइयों को व्यक्त करने से रोक सकते हैं। इसलिए शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण संभावित कड़ी के रूप में देखे जा सकते हैं।

4.6 विद्यालयीय संस्कृति और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा

विद्यालयीय संस्कृति में विद्यालय के सदस्यों द्वारा साझा की जाने वाली मान्यताएँ, अपेक्षाएँ, मूल्य और व्यवहार-पद्धतियाँ सम्मिलित होती हैं। ऐसी संस्कृति जो प्रयास, सहयोग, सम्मान और सीखने को महत्व देती है, विद्यार्थियों में सकारात्मक शैक्षणिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकती है। मनोवैज्ञानिक सुरक्षा इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है। यदि विद्यार्थी को यह विश्वास हो कि प्रश्न पूछने, गलती करने, अपनी कठिनाई बताने या सहायता माँगने पर उसका उपहास अथवा अनुचित दंड नहीं होगा, तो वह सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रियता से भाग ले सकता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक सुरक्षा केवल विद्यार्थी के भावनात्मक कल्याण से संबंधित नहीं है, बल्कि सीखने की गुणवत्ता से भी जुड़ी हो सकती है।

4.7 व्यक्ति-पर्यावरण अंतःक्रिया का दृष्टिकोण

प्रस्तुत अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार **व्यक्ति-पर्यावरण अंतःक्रिया** की धारणा है। इसके अनुसार विद्यार्थी की व्यक्तिगत विशेषताओं और उसके पर्यावरणीय संदर्भ को अलग-अलग समझना पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति अपने पर्यावरण को प्रभावित करता है और पर्यावरण भी व्यक्ति के व्यवहार, अनुभव तथा विकास को प्रभावित करता है। इस दृष्टिकोण को वर्तमान विषय पर लागू करने पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के व्यक्तिगत संसाधनों का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि संगठनात्मक वातावरण उसके सीखने के संदर्भ का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरणतः उच्च संवेगात्मक दक्षता वाला विद्यार्थी सहयोगात्मक विद्यालयीय वातावरण में अपनी सामाजिक एवं आत्म-नियामक क्षमताओं का अधिक प्रभावी उपयोग कर सकता है। दूसरी ओर, सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों को अपनी संवेगात्मक क्षमताओं के विकास और प्रयोग के लिए अवसर उपलब्ध करा सकता है। इस प्रकार दोनों कारकों के बीच संभावित संबंध को केवल योगात्मक रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इनके बीच **पूरकता और अंतःक्रिया** की संभावना भी महत्वपूर्ण है।

4.8 शैक्षणिक उपलब्धि की मध्यवर्ती प्रक्रियाएँ

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण का शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध कुछ मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। इनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं—

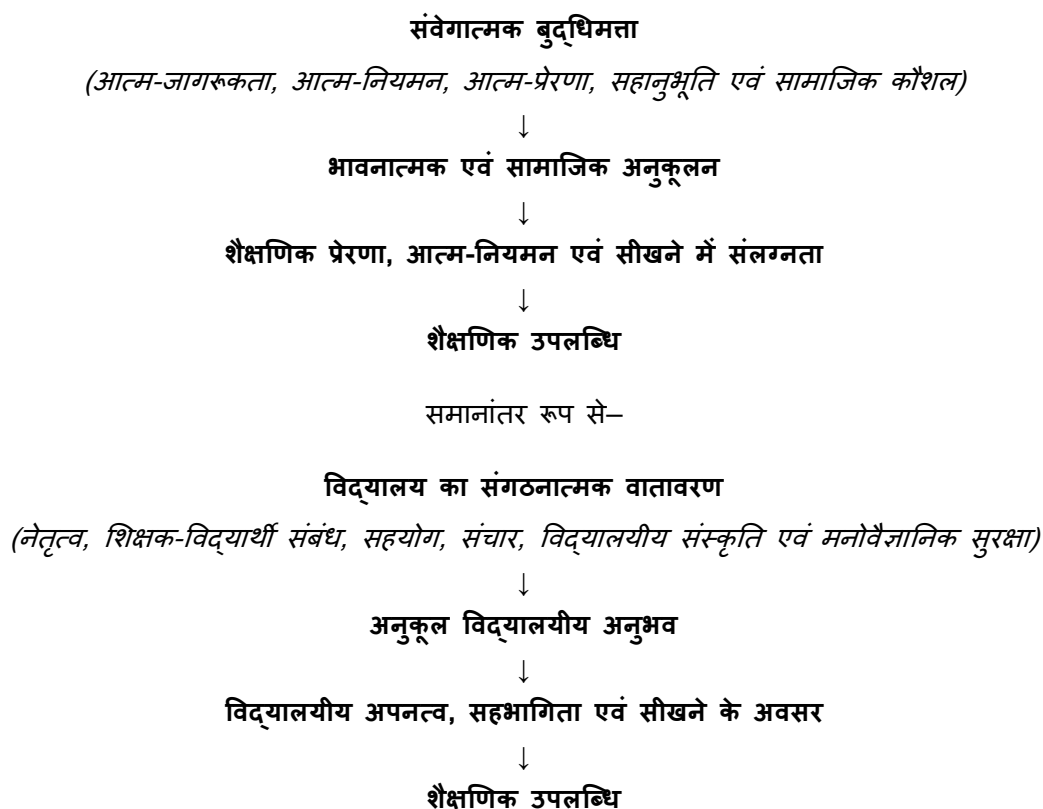
- **शैक्षणिक प्रेरणा:** विद्यार्थी सीखने के लक्ष्यों के प्रति कितना प्रतिबद्ध रहता है।
- **सीखने में संलग्नता:** विद्यार्थी कक्षा एवं शैक्षणिक गतिविधियों में कितनी सक्रियता से भाग लेता है।
- **आत्म-नियमन:** विद्यार्थी अपने अध्ययन, समय और व्यवहार को किस प्रकार व्यवस्थित करता है।

- **विद्यालयीय अपनत्व:** विद्यार्थी विद्यालय को अपने विकास एवं सहभागिता के अनुकूल समुदाय के रूप में किस सीमा तक अनुभव करता है।
- **तनाव प्रबंधन:** विद्यार्थी परीक्षा एवं शैक्षणिक दबाव जैसी परिस्थितियों का किस प्रकार सामना करता है।
- **सामाजिक अनुकूलन:** विद्यार्थी सहपाठियों और शिक्षकों के साथ कितने प्रभावी संबंध स्थापित करता है।

इन प्रक्रियाओं को एक संभावित व्याख्यात्मक तंत्र के रूप में देखा जा सकता है, न कि इस अध्ययन द्वारा प्रमाणित कारणात्मक मार्ग के रूप में।

4.9 प्रस्तावित संकल्पनात्मक मॉडल

उपरोक्त सैद्धांतिक विवेचन के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित संकल्पनात्मक मॉडल प्रस्तावित करता है:



और इन दोनों मार्गों के मध्य—

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता ↔ सकारात्मक विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण

इस अंतःसंबंध को विद्यार्थी के समग्र सीखने के अनुभव को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में देखा जाता है।

4.10 प्रस्तावित रूपरेखा का समेकित अर्थ

प्रस्तुत संकल्पनात्मक रूपरेखा का केंद्रीय प्रतिपादन यह है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए “विद्यार्थी क्या लेकर विद्यालय आता है” और “विद्यालय उसे किस प्रकार का सीखने का वातावरण प्रदान करता है”, दोनों प्रश्नों पर एक साथ विचार करना आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी को अपनी भावनाओं, प्रेरणा और सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित करने के लिए आंतरिक संसाधन प्रदान करती है। विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण इन संसाधनों के विकास और उपयोग के लिए बाह्य संदर्भ उपलब्ध कराता है। यदि दोनों के बीच अनुकूलता स्थापित होती है, तो विद्यार्थी के लिए सीखने में संलग्न होने, कठिनाइयों से निपटने, सहायता प्राप्त करने और शैक्षणिक लक्ष्यों की ओर निरंतर प्रयास करने की परिस्थितियाँ अधिक अनुकूल हो सकती हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि को एक **बहु-आयामी एवं संदर्भ-संवेदी परिणाम** के रूप में देखने का समर्थन करता है। यह दृष्टिकोण शिक्षा में केवल परीक्षा-परिणामों पर केंद्रित होने के बजाय विद्यार्थी के भावनात्मक संसाधनों तथा विद्यालयीय वातावरण की गुणवत्ता को भी शैक्षणिक विकास के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में स्वीकार करता है।

4.11 भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए आधार

यद्यपि वर्तमान अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित नहीं है, प्रस्तुत संकल्पनात्मक रूपरेखा भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए स्पष्ट आधार प्रदान करती है। भविष्य के अध्ययनों में यह परीक्षण किया जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण का शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध किस सीमा तक है तथा क्या सीखने में संलग्नता, शैक्षणिक प्रेरणा अथवा आत्म-नियमन जैसे कारक इन संबंधों को स्पष्ट करने में मध्यवर्ती भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार, भविष्य के शोध में यह भी जाँचा जा सकता है कि विद्यालयीय नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध अथवा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसे संगठनात्मक वातावरण के विशिष्ट आयामों का संबंध संपूर्ण संगठनात्मक वातावरण की तुलना में शैक्षणिक उपलब्धि से अलग-अलग प्रकार का है या नहीं। इससे संवेगात्मक एवं संगठनात्मक कारकों की भूमिका को अधिक सूक्ष्मता से समझने में सहायता मिल सकती है। अतः प्रस्तुत सैद्धांतिक एवं संकल्पनात्मक रूपरेखा केवल वर्तमान समीक्षात्मक अध्ययन की व्याख्या का आधार नहीं है, बल्कि माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए संभावित शोध-प्रश्नों और परीक्षण योग्य संबंधों की दिशा भी निर्धारित करती है।

5. समीक्षात्मक विश्लेषण एवं शैक्षिक निहितार्थ

5.1 शैक्षणिक उपलब्धि की बहुआयामी प्रकृति

शैक्षणिक उपलब्धि को लंबे समय तक विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता, विषयगत ज्ञान तथा परीक्षा में प्राप्त अंकों के संदर्भ में देखा जाता रहा है। निस्संदेह, संज्ञानात्मक क्षमता और विषयगत दक्षता शैक्षणिक सफलता के महत्वपूर्ण आधार हैं, किंतु केवल इन्हीं के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन की पूर्ण व्याख्या नहीं की जा सकती। एक ही कक्षा, समान पाठ्यक्रम और समान शिक्षक के अंतर्गत अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में भी उपलब्धि के स्तर में पर्याप्त अंतर दिखाई दे सकता है। यह अंतर इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि सीखने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक-संदर्भगत कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इस दृष्टि से संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण शैक्षणिक उपलब्धि की अधिक समग्र व्याख्या के लिए दो महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करते हैं। पहला विद्यार्थी के भीतर उपलब्ध भावनात्मक

एवं सामाजिक संसाधनों से संबंधित है, जबकि दूसरा उस संस्थागत संदर्भ से संबंधित है जिसमें सीखने की प्रक्रिया संपन्न होती है। इन दोनों आयामों को एक साथ देखने से शैक्षणिक उपलब्धि को केवल “विद्यार्थी की क्षमता” के बजाय “विद्यार्थी और उसके सीखने के वातावरण के संबंध” के रूप में समझने की संभावना बढ़ती है।

5.2 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की संभावित शैक्षिक भूमिका

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की शैक्षणिक प्रासंगिकता मुख्यतः इस तथ्य में निहित है कि सीखना एक भावनात्मक रूप से तटस्थ प्रक्रिया नहीं है। विद्यार्थी सीखते समय उत्साह, जिज्ञासा, चिंता, निराशा, आत्मविश्वास, भय तथा संतुष्टि जैसे अनेक संवेगों का अनुभव करते हैं। इन संवेगों का प्रबंधन सीखने की निरंतरता और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। उच्च संवेगात्मक जागरूकता विद्यार्थी को यह पहचानने में सहायता कर सकती है कि उसकी भावनात्मक अवस्था उसके अध्ययन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है। उदाहरण के लिए, परीक्षा के प्रति अत्यधिक चिंता का अनुभव करने वाला विद्यार्थी यदि अपनी चिंता को पहचानने और उसके कारणों को समझने में सक्षम है, तो वह उपयुक्त रणनीतियों का उपयोग कर सकता है। इसी प्रकार आत्म-नियमन विद्यार्थी को तत्काल निराशा या असफलता के बावजूद अपने शैक्षणिक प्रयास को जारी रखने में सहायता कर सकता है।

इस संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को शैक्षणिक उपलब्धि का प्रत्यक्ष निर्धारक मानने के बजाय एक **सहायक मनोवैज्ञानिक संसाधन** के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है। यह विद्यार्थी को उन व्यवहारों के लिए सक्षम बना सकती है जो अप्रत्यक्ष रूप से बेहतर शैक्षणिक परिणामों से जुड़े होते हैं—जैसे अध्ययन में निरंतरता, लक्ष्य-निर्धारण, समय प्रबंधन, कठिनाइयों से निपटना और सहायता प्राप्त करना।

5.3 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-नियमन

माध्यमिक स्तर पर आत्म-नियमन विशेष महत्व रखता है। विद्यार्थियों को अपनी पढ़ाई की योजना बनाने, ध्यान बनाए रखने, समय का प्रबंधन करने और परीक्षा-संबंधी तनाव का सामना करने की आवश्यकता होती है। यदि विद्यार्थी अपनी भावनाओं एवं व्यवहार को परिस्थितियों के अनुरूप नियंत्रित करने में सक्षम है, तो उसके लिए दीर्घकालिक शैक्षणिक लक्ष्यों के प्रति निरंतर प्रयास करना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है। यहाँ संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-नियमन के बीच घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। विद्यार्थी की भावनात्मक प्रतिक्रिया उसके व्यवहार को प्रभावित कर सकती है और व्यवहार उसकी सीखने की प्रक्रिया को। उदाहरणतः किसी कठिन विषय में बार-बार असफलता निराशा उत्पन्न कर सकती है। यदि विद्यार्थी इस निराशा को नियंत्रित नहीं कर पाता, तो वह अध्ययन से बचने लग सकता है। इसके विपरीत, यदि वह अपनी निराशा को पहचानकर उसे प्रबंधित कर सके, तो वह अतिरिक्त सहायता प्राप्त करने अथवा वैकल्पिक अध्ययन रणनीति अपनाने का प्रयास कर सकता है।

अतः संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व केवल भावनात्मक कल्याण तक सीमित नहीं है; यह विद्यार्थी के **स्व-नियामक अधिगम व्यवहार** से भी संबंधित हो सकती है।

5.4 विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण की भूमिका

विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमताएँ जिस वातावरण में विकसित और प्रयुक्त होती हैं, उसकी गुणवत्ता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थी के लिए सीखने की सामाजिक और मनोवैज्ञानिक

परिस्थितियाँ निर्मित करता है। यदि विद्यालय में सहयोग, सम्मान, निष्पक्षता, सुरक्षा और सहभागिता की संस्कृति है, तो विद्यार्थी विद्यालय को सीखने के लिए अधिक अनुकूल स्थान के रूप में अनुभव कर सकता है।

विद्यालयीय वातावरण का प्रभाव केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रहता। शिक्षक भी उसी संगठनात्मक संस्कृति का हिस्सा होते हैं। यदि विद्यालय में शिक्षकों को सहयोग, स्वायत्तता और व्यावसायिक विकास के अवसर प्राप्त होते हैं, तो इससे उनके शिक्षण व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। बेहतर शिक्षण व्यवहार अंततः विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को प्रभावित कर सकता है। इस प्रकार विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण को विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के लिए एक **संदर्भगत आधार** के रूप में देखा जा सकता है।

5.5 शिक्षक-विद्यार्थी संबंध: एक महत्वपूर्ण मध्यवर्ती आयाम

विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के विभिन्न घटकों में शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विशेष महत्व रखते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के लिए केवल विषय-वस्तु के स्रोत नहीं होते, बल्कि वे उनकी शैक्षणिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने वाले महत्वपूर्ण वयस्क भी होते हैं। सम्मानपूर्ण, सहायक और विश्वास-आधारित शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थियों में विद्यालयीय अपनत्व तथा शैक्षणिक सहभागिता को बढ़ावा दे सकते हैं। जब विद्यार्थी शिक्षक से अपनी कठिनाइयों के बारे में खुलकर बात कर सकता है, तब उसके लिए सहायता प्राप्त करना आसान हो जाता है। इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी शिक्षक से भयभीत रहता है, तो वह अपनी सीखने की कठिनाइयों को छिपा सकता है और सहायता प्राप्त करने के अवसर से वंचित रह सकता है। यह संबंध संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संदर्भ में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। संवेगात्मक रूप से सक्षम शिक्षक विद्यार्थियों की भावनात्मक अवस्थाओं को पहचानने और उचित प्रतिक्रिया देने में अधिक सक्षम हो सकते हैं। इसी प्रकार संवेगात्मक रूप से दक्ष विद्यार्थी शिक्षक के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने और प्रतिक्रिया को रचनात्मक रूप से ग्रहण करने में सक्षम हो सकता है।

5.6 सकारात्मक विद्यालय संस्कृति और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा

विद्यालय की संस्कृति विद्यार्थियों के व्यवहार और सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यदि विद्यालय में केवल उच्च अंक प्राप्त करने पर बल दिया जाता है और त्रुटियों को असफलता के रूप में देखा जाता है, तो विद्यार्थी में प्रदर्शन-संबंधी चिंता विकसित हो सकती है। इसके विपरीत, यदि विद्यालय प्रयास, प्रगति, जिज्ञासा और सीखने की प्रक्रिया को महत्व देता है, तो विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से सीखने में संलग्न हो सकता है। मनोवैज्ञानिक सुरक्षा इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सीखने की प्रक्रिया में प्रश्न पूछना, गलत उत्तर देना, सहायता माँगना और अपनी कठिनाइयों को स्वीकार करना आवश्यक है। यदि विद्यार्थी को यह विश्वास हो कि इन व्यवहारों के कारण उसे अपमानित या अनुचित रूप से दंडित नहीं किया जाएगा, तो वह सीखने की प्रक्रिया में अधिक खुलकर भाग ले सकता है।

इस प्रकार सकारात्मक विद्यालयीय संस्कृति संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के विकास के लिए भी अनुकूल हो सकती है। विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, दूसरों की भावनाओं को समझने तथा संघर्षों को रचनात्मक ढंग से हल करने के अवसर मिल सकते हैं।

5.7 संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण की अंतःक्रियात्मक भूमिका

प्रस्तुत अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रतिपादन यह है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण को अलग-अलग देखने की अपेक्षा उनके संभावित अंतर्संबंध को समझना अधिक उपयोगी है। विद्यार्थी की संवेगात्मक दक्षता और विद्यालयीय वातावरण एक-दूसरे को सुदृढ़ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाला विद्यार्थी किसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर सकता है। यदि उसी समय विद्यालय उसे सहयोगात्मक शिक्षक, सकारात्मक सहपाठी वातावरण और सहायता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करता है, तो वह कठिनाई से प्रभावी रूप से निपट सकता है। इसके विपरीत, यदि विद्यालयीय वातावरण असहयोगात्मक है, तो व्यक्तिगत भावनात्मक संसाधनों का उपयोग भी सीमित हो सकता है। इसी प्रकार, सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण विद्यार्थियों में संवेगात्मक दक्षताओं के विकास को प्रोत्साहित कर सकता है। सम्मानपूर्ण संवाद, सहयोगात्मक गतिविधियाँ, संघर्ष-समाधान के अवसर तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए सुरक्षित स्थान विद्यार्थियों को संवेगों के प्रभावी प्रबंधन का अभ्यास प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रकार एक संभावित **सुदृढ़ीकरण चक्र** की कल्पना की जा सकती है:

सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण → संवेगात्मक दक्षताओं के विकास के अवसर → बेहतर भावनात्मक एवं सामाजिक अनुकूलन → अधिक प्रभावी सीखने का व्यवहार → बेहतर शैक्षणिक अनुभव

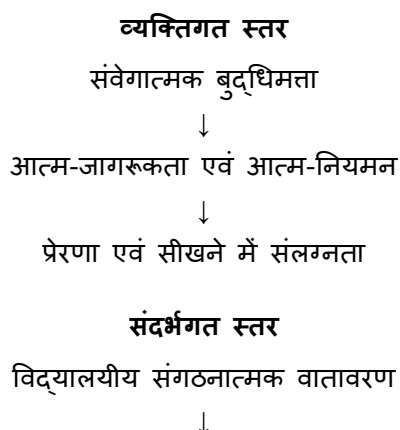
साथ ही— **उच्च संवेगात्मक दक्षता → सकारात्मक पारस्परिक संबंध एवं सहभागिता → विद्यालयीय वातावरण में सकारात्मक अंतःक्रियाएँ → अधिक अनुकूल सीखने का वातावरण**

यह संबंध वर्तमान अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण वैचारिक निष्कर्षों में से एक है।

5.8 शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में एक समेकित दृष्टिकोण

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक उपलब्धि को किसी एक स्वतंत्र चर के माध्यम से समझना सीमित दृष्टिकोण हो सकता है। विद्यार्थी की भावनात्मक क्षमता, सीखने की प्रेरणा, आत्म-नियमन तथा सामाजिक दक्षता उसके व्यक्तिगत संसाधनों का निर्माण करते हैं, जबकि विद्यालयीय नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहयोग और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा उसके सीखने के संदर्भ को निर्धारित करते हैं।

इन दोनों स्तरों के बीच सीखने में संलग्नता, विद्यालयीय अपनत्व, शैक्षणिक प्रेरणा तथा आत्म-नियामक व्यवहार जैसी प्रक्रियाएँ महत्वपूर्ण कड़ियों के रूप में कार्य कर सकती हैं। इसलिए एक अधिक समग्र मॉडल में शैक्षणिक उपलब्धि को निम्न प्रकार समझा जा सकता है:



समर्थन, सहयोग एवं मनोवैज्ञानिक सुरक्षा



अनुकूल सीखने की परिस्थितियाँ

दोनों का समन्वय



सकारात्मक शैक्षणिक व्यवहार



शैक्षणिक उपलब्धि

यह मॉडल शैक्षणिक उपलब्धि को एक गतिशील प्रक्रिया के परिणाम के रूप में देखने की अनुमति देता है, जिसमें विद्यार्थी और उसका वातावरण निरंतर अंतःक्रिया करते हैं।

5.9 शिक्षकों के लिए शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन से शिक्षकों के लिए पहला महत्वपूर्ण निहितार्थ यह है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक कठिनाइयों को केवल विषयगत कमजोरी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। किसी विद्यार्थी की कम उपलब्धि के पीछे परीक्षा-चिंता, आत्मविश्वास की कमी, प्रेरणा में कमी, सामाजिक कठिनाइयाँ या भावनात्मक तनाव जैसे कारक भी हो सकते हैं।

शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है—

- विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं एवं कठिनाइयों को व्यक्त करने के अवसर देना।
- त्रुटियों को सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा मानना।
- विद्यार्थियों में आत्म-नियमन और लक्ष्य-निर्धारण की आदत विकसित करना।
- सहयोगात्मक अधिगम एवं समूह-गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- विद्यार्थियों को रचनात्मक एवं समयबद्ध प्रतिपुष्टि प्रदान करना।
- आवश्यकता पड़ने पर विद्यार्थियों को उपयुक्त शैक्षिक एवं भावनात्मक सहायता की ओर निर्देशित करना।

5.10 विद्यालय प्रशासन के लिए निहितार्थ

विद्यालय प्रशासन के स्तर पर केवल परीक्षा परिणामों को विद्यालय की सफलता का प्रमुख मानदंड मानने के बजाय विद्यालयीय वातावरण की गुणवत्ता पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण स्वतः विकसित नहीं होता; इसके लिए नेतृत्व, संस्थागत नीतियों और दैनिक व्यवहारों में निरंतर प्रयास आवश्यक है।

विद्यालय प्रशासन को—

- सहयोगात्मक नेतृत्व को प्रोत्साहित करना,
- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के अवसर उपलब्ध कराना,

- प्रभावी आंतरिक संचार स्थापित करना,
- विद्यार्थियों की आवाज़ और सहभागिता को महत्व देना,
- भेदभाव एवं अपमानजनक व्यवहार के प्रति स्पष्ट संस्थागत दृष्टिकोण अपनाना,
- सुरक्षित एवं सम्मानपूर्ण विद्यालयीय संस्कृति विकसित करना,

जैसी व्यवस्थाओं पर ध्यान देना चाहिए।

5.11 शिक्षक-प्रशिक्षण में संवेगात्मक दक्षता का समावेश

यदि विद्यालय विद्यार्थियों की संवेगात्मक आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करना चाहते हैं, तो शिक्षकों को भी आवश्यक संवेगात्मक दक्षताओं से सुसज्जित करना महत्वपूर्ण है। शिक्षक की अपनी भावनात्मक जागरूकता, तनाव प्रबंधन और सामाजिक कौशल उसके कक्षा-व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विषयगत एवं शिक्षण-कौशल के साथ-साथ निम्न पहलुओं को भी स्थान दिया जा सकता है—

- भावनात्मक आत्म-जागरूकता,
- तनाव एवं संघर्ष प्रबंधन,
- प्रभावी संवाद,
- सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार,
- कक्षा में भावनात्मक रूप से सुरक्षित वातावरण का निर्माण,
- विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान।

इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को केवल विद्यार्थियों के विकास का विषय न मानकर पूरे विद्यालय समुदाय की क्षमता के रूप में देखा जा सकता है।

5.12 शिक्षा-नीति के लिए निहितार्थ

शिक्षा-नीति के स्तर पर अध्ययन का प्रमुख निहितार्थ यह है कि शैक्षणिक गुणवत्ता को केवल परीक्षा परिणामों के आधार पर परिभाषित करना पर्याप्त नहीं है। यदि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र विकास है, तो विद्यालयों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा सकारात्मक विद्यालयीय संस्कृति को भी संस्थागत महत्व दिया जाना चाहिए। नीति-निर्माताओं के लिए यह आवश्यक हो सकता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करें जो विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं सामाजिक दक्षताओं के विकास के साथ-साथ विद्यालयीय वातावरण को भी सुदृढ़ करें। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, जहाँ विद्यार्थी शैक्षणिक दबाव और विकासात्मक परिवर्तनों दोनों का सामना करते हैं, ऐसी व्यवस्थाएँ अधिक उपयोगी हो सकती हैं।

5.13 सावधानियाँ एवं आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

यद्यपि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण को शैक्षणिक उपलब्धि के संभावित महत्वपूर्ण कारकों के रूप में देखा जा सकता है, फिर भी इनके महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। शैक्षणिक

उपलब्धि बहु-कारकीय होती है और इसमें पारिवारिक, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, संज्ञानात्मक तथा संस्थागत अनेक कारक योगदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा के मापन एवं परिभाषा में भी विभिन्न दृष्टिकोण पाए जाते हैं। कुछ दृष्टिकोण इसे क्षमता के रूप में देखते हैं, जबकि कुछ इसे व्यक्तित्व एवं सामाजिक दक्षताओं के व्यापक समूह से जोड़ते हैं। इसी प्रकार विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण की अवधारणा भी विभिन्न उपकरणों और आयामों के माध्यम से परिभाषित की जाती है। अतः विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों की तुलना करते समय इन वैचारिक एवं मापन-संबंधी भिन्नताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उपलब्धि साहित्य में पाए जाने वाले संबंधों को स्वतः कारणात्मक संबंध नहीं माना जा सकता। किसी चर का शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध पाया जाना यह सिद्ध नहीं करता कि वही चर उपलब्धि में परिवर्तन का प्रत्यक्ष कारण है। इसलिए भविष्य के अनुसंधान में अधिक मजबूत शोध-अभिकल्प, विविध नमूने तथा दीर्घकालिक अध्ययन उपयोगी होंगे।

5.14 समेकित शैक्षिक दृष्टिकोण

समग्र रूप से, प्रस्तुत समीक्षात्मक विश्लेषण यह संकेत करता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए “भावनात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी” और “सहायक विद्यालयीय वातावरण” दोनों की आवश्यकता पर विचार किया जाना चाहिए। केवल विद्यार्थी को भावनात्मक रूप से सक्षम बनाने से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होंगे यदि विद्यालयीय संरचना उसके विकास के लिए अनुकूल नहीं है। इसी प्रकार, केवल सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण भी पर्याप्त नहीं हो सकता यदि विद्यार्थी अपनी भावनाओं, प्रेरणा और व्यवहार को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में कठिनाई अनुभव करता है। इसलिए अधिक प्रभावी शैक्षिक दृष्टिकोण वह होगा जो विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमताओं और विद्यालयीय परिस्थितियों को परस्पर पूरक माने। इस दृष्टिकोण में शैक्षणिक उपलब्धि केवल परीक्षा-परिणाम नहीं रह जाती, बल्कि वह ऐसे सीखने के अनुभव का परिणाम बनती है जिसमें विद्यार्थी स्वयं को सक्षम, सुरक्षित, समर्थित और सीखने के लिए प्रेरित अनुभव करता है। इसी समेकित दृष्टिकोण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा में शैक्षणिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने के लिए संवेगात्मक विकास, सकारात्मक विद्यालयीय संस्कृति और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को एक-दूसरे से जोड़कर देखना आवश्यक है।

6. निष्कर्ष, सीमाएँ एवं भविष्य के अनुसंधान की दिशा

6.1 निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। इस स्तर पर विद्यार्थी न केवल विभिन्न विषयों में ज्ञान एवं कौशल अर्जित करते हैं, बल्कि वे भावनात्मक आत्म-नियमन, सामाजिक संबंधों, आत्म-पहचान, स्वतंत्र निर्णय तथा भविष्य की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का भी विकास करते हैं। इसलिए इस अवस्था में शैक्षणिक उपलब्धि को केवल संज्ञानात्मक क्षमता अथवा विषयगत ज्ञान के परिणाम के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। प्रस्तुत संकल्पनात्मक अध्ययन ने इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण की संभावित भूमिका का विश्लेषण किया है।

साहित्य के समीक्षात्मक एवं सैद्धांतिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों के लिए ऐसे व्यक्तिगत संसाधन उपलब्ध करा सकती है जो उन्हें अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने,

कठिन परिस्थितियों से निपटने, स्वयं को प्रेरित रखने तथा दूसरों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करने में सहायता करते हैं। आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल जैसे आयाम विद्यार्थी के शैक्षणिक व्यवहार से विभिन्न स्तरों पर संबंधित हो सकते हैं। विशेष रूप से आत्म-नियमन और आत्म-प्रेरणा सीखने में निरंतरता, लक्ष्य-निर्धारण तथा कठिनाइयों के बावजूद प्रयास बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक संसाधन प्रदान कर सकते हैं। दूसरी ओर, विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण वह संदर्भ प्रदान करता है जिसमें विद्यार्थी की शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं। विद्यालयीय नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, शिक्षक सहयोग, संचार, सहभागिता, विद्यालयीय संस्कृति तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा जैसे घटक विद्यार्थियों के विद्यालयीय अनुभव को आकार दे सकते हैं। सकारात्मक एवं सहयोगात्मक संगठनात्मक वातावरण विद्यार्थियों को सीखने, प्रश्न पूछने, सहायता प्राप्त करने तथा अपनी कठिनाइयों को व्यक्त करने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कर सकता है।

इस अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण को पूर्णतः स्वतंत्र कारकों के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। दोनों के बीच संभावित अंतःक्रिया विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को अधिक व्यापक रूप से प्रभावित कर सकती है। विद्यार्थी की संवेगात्मक क्षमताएँ उसे विद्यालयीय परिस्थितियों के साथ प्रभावी रूप से अनुकूलन करने में सहायता कर सकती हैं, जबकि सकारात्मक विद्यालयीय वातावरण उसकी संवेगात्मक क्षमताओं के विकास एवं उपयोग के लिए आवश्यक अवसर और समर्थन प्रदान कर सकता है। इस प्रकार शैक्षणिक उपलब्धि को समझने के लिए एक **व्यक्ति-पर्यावरण आधारित दृष्टिकोण** अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। इस दृष्टिकोण में विद्यार्थी की व्यक्तिगत संवेगात्मक क्षमताएँ और विद्यालयीय संदर्भ एक-दूसरे से संबद्ध होकर सीखने में संलग्नता, शैक्षणिक प्रेरणा, आत्म-नियमन, विद्यालयीय अपनत्व तथा सकारात्मक शैक्षणिक व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। ये प्रक्रियाएँ आगे चलकर शैक्षणिक उपलब्धि से संबद्ध हो सकती हैं। अतः यह अध्ययन इस व्यापक धारणा का समर्थन करता है कि माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि को सुदृढ़ करने के लिए केवल पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि अथवा परीक्षा-प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों के **भावनात्मक विकास और विद्यालयीय वातावरण की गुणवत्ता** को भी शिक्षा की गुणवत्ता के महत्वपूर्ण आयामों के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

6.2 प्रमुख शैक्षिक निष्पत्तियाँ

प्रस्तुत विश्लेषण से कुछ महत्वपूर्ण शैक्षिक निष्पत्तियाँ सामने आती हैं। प्रथम, विद्यार्थियों की भावनात्मक क्षमताओं को शिक्षा की मुख्यधारा से अलग किसी अतिरिक्त गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। भावनात्मक आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सहानुभूति और सामाजिक कौशल सीखने की दैनिक प्रक्रिया का हिस्सा बनाए जा सकते हैं। द्वितीय, विद्यालयीय वातावरण में सकारात्मक परिवर्तन केवल भौतिक संसाधनों में वृद्धि से संभव नहीं है। संगठनात्मक संबंधों, नेतृत्व, संचार, सहयोग और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की गुणवत्ता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। एक सुव्यवस्थित विद्यालय वह नहीं है जहाँ केवल नियमों का पालन होता हो, बल्कि वह भी है जहाँ विद्यार्थी स्वयं को सम्मानित, सुरक्षित और सीखने के लिए समर्थ अनुभव करते हों। तृतीय, शिक्षक इस पूरी प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। शिक्षक का भावनात्मक व्यवहार, विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण, प्रतिपुष्टि देने की शैली तथा कठिनाइयों के प्रति संवेदनशीलता कक्षा के भावनात्मक वातावरण को प्रभावित कर सकती है। इसलिए शिक्षक-प्रशिक्षण में संवेगात्मक एवं सामाजिक दक्षताओं को पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिए।

6.3 अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति संकल्पनात्मक एवं समीक्षात्मक है। अतः इसकी कुछ स्वाभाविक सीमाएँ हैं।

पहली सीमा यह है कि अध्ययन में प्राथमिक आँकड़ों का संग्रह नहीं किया गया है। इसलिए संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, विद्यालयीय संगठनात्मक वातावरण तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य प्रस्तावित संबंधों का प्रत्यक्ष सांख्यिकीय परीक्षण संभव नहीं है।

दूसरी सीमा यह है कि उपलब्ध साहित्य में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा संगठनात्मक वातावरण की अवधारणाओं को विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा अलग-अलग रूपों में परिभाषित एवं मापा गया है। इस वैचारिक विविधता के कारण विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों की प्रत्यक्ष तुलना में सावधानी आवश्यक है।

तीसरी सीमा यह है कि शैक्षणिक उपलब्धि बहु-कारकीय परिणाम है। पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, विद्यालय के संसाधन, शिक्षण की गुणवत्ता, विद्यार्थी की पूर्व उपलब्धि, प्रेरणा, संज्ञानात्मक क्षमता तथा व्यक्तिगत परिस्थितियाँ भी शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं। अतः वर्तमान अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण को शैक्षणिक उपलब्धि के एकमात्र अथवा सार्वभौमिक निर्धारक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

चौथी सीमा यह है कि विभिन्न विद्यालयों, क्षेत्रों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में संगठनात्मक वातावरण की प्रकृति भिन्न हो सकती है। इसलिए किसी एक संदर्भ से प्राप्त निष्कर्षों को सभी माध्यमिक विद्यालयों पर समान रूप से लागू करना उचित नहीं होगा।

6.4 भविष्य के अनुसंधान की दिशा

वर्तमान संकल्पनात्मक विश्लेषण भविष्य में अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए अनेक संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। भविष्य के शोध में सबसे पहले इस बात का परीक्षण किया जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध किस सीमा तक विद्यमान है। इसी प्रकार, संगठनात्मक वातावरण के विभिन्न आयामों—जैसे विद्यालयीय नेतृत्व, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, शिक्षक सहयोग, संचार तथा मनोवैज्ञानिक सुरक्षा—का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया जा सकता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि संगठनात्मक वातावरण का कौन-सा आयाम विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव से अपेक्षाकृत अधिक निकटता से संबंधित है।

भविष्य के शोध में केवल द्विचर संबंधों का अध्ययन करने के बजाय अधिक विकसित सांख्यिकीय मॉडल अपनाए जा सकते हैं। उदाहरणतः यह जाँचा जा सकता है कि **शैक्षणिक प्रेरणा, सीखने में संलग्नता या आत्म-नियमन** संवेगात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच मध्यवर्ती भूमिका निभाते हैं या नहीं। इसी प्रकार यह भी अध्ययन किया जा सकता है कि सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध को किस सीमा तक सुदृढ़ करता है। दीर्घकालिक अध्ययनों की भी आवश्यकता है। एक ही समय-बिंदु पर किए गए अध्ययन की तुलना में दीर्घकालिक अनुसंधान यह समझने में अधिक सक्षम हो सकता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक दक्षता तथा विद्यालयीय अनुभव समय के साथ किस प्रकार बदलते हैं और इन परिवर्तनों का उनके शैक्षणिक विकास से क्या संबंध है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न प्रकार के विद्यालयों—सरकारी

एवं निजी, ग्रामीण एवं शहरी तथा विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों-के बीच तुलनात्मक अध्ययन भी उपयोगी हो सकते हैं। ऐसे अध्ययनों से यह पता लगाने में सहायता मिल सकती है कि संवेगात्मक बुद्धिमत्ता और संगठनात्मक वातावरण की भूमिका संदर्भानुसार किस प्रकार परिवर्तित होती है।

6.5 समापन टिप्पणी

समग्र रूप से, प्रस्तुत अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को केवल संज्ञानात्मक क्षमता अथवा परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से समझना अधूरा होगा। विद्यार्थी की भावनात्मक दक्षता और विद्यालयीय वातावरण दोनों उसके सीखने के अनुभव के महत्वपूर्ण घटक हैं। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी को अपनी भावनाओं, प्रेरणा एवं सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में सहायता कर सकती है, जबकि सकारात्मक संगठनात्मक वातावरण इन क्षमताओं के विकास एवं प्रयोग के लिए आवश्यक सामाजिक और संस्थागत आधार प्रदान कर सकता है। अतः माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए ऐसी शैक्षिक व्यवस्था की आवश्यकता है जो **ज्ञानात्मक उत्कृष्टता के साथ भावनात्मक दक्षता और सकारात्मक विद्यालयीय संस्कृति** को भी समान महत्व दे। इस समेकित दृष्टिकोण से विद्यालय विद्यार्थियों को केवल परीक्षा में सफल होने के लिए नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी, आत्म-नियंत्रित, सामाजिक रूप से सक्षम और आजीवन सीखने के लिए तैयार व्यक्ति के रूप में विकसित करने में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। अंततः, प्रस्तुत संकल्पनात्मक विश्लेषण को अंतिम कारणात्मक निष्कर्ष के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए एक सैद्धांतिक आधार के रूप में देखा जाना चाहिए। वास्तविक विद्यार्थियों और विद्यालयों से प्राप्त व्यवस्थित आँकड़ों के माध्यम से प्रस्तावित संबंधों की जाँच भविष्य में इस क्षेत्र की समझ को और अधिक सुदृढ़ कर सकती है।

संदर्भ सूची

1. Cipriano, C., Strambler, M. J., Naples, L. H., Ha, C., Kirk, M., Wood, M., Sehgal, K., Zieher, A. K., Eveleigh, A., McCarthy, M., Funaro, M., Ponnock, A., Chow, J. C., & Durlak, J. (2023). The state of evidence for social and emotional learning: A contemporary meta-analysis of universal school-based SEL interventions. *Child Development*, 94(5), 1181–1204. <https://doi.org/10.1111/cdev.13968>
2. Daily, S. M., Mann, M. J., Kristjansson, A. L., Smith, M. L., & Zullig, K. J. (2019). School climate and academic achievement in middle and high school students. *Journal of School Health*, 89(3), 173–180. <https://doi.org/10.1111/josh.12726>
3. Demirtas-Zorbaz, S., Akin-Arikan, C., & Terzi, R. (2021). Does school climate that includes students' views deliver academic achievement? A multilevel meta-analysis. *School Effectiveness and School Improvement*, 32(4), 543–563. <https://doi.org/10.1080/09243453.2021.1920432>
4. Downey, L. A., Mountstephen, J., Lloyd, J., Hansen, K., & Stough, C. (2008). Emotional intelligence and scholastic achievement in Australian adolescents. *Australian Journal of Psychology*, 60(1), 10–17. <https://doi.org/10.1080/00049530701449505>
5. Durlak, J. A., Weissberg, R. P., Dymnicki, A. B., Taylor, R. D., & Schellinger, K. B. (2011). The impact of enhancing students' social and emotional learning: A meta-

- analysis of school-based universal interventions. *Child Development*, 82(1), 405–432. <https://doi.org/10.1111/j.1467-8624.2010.01564.x>
6. Erdem, C., & Kaya, M. (2024). The relationship between school and classroom climate, and academic achievement: A meta-analysis. *Journal of Early Adolescence*, 45(4), 535–558. <https://doi.org/10.1177/01430343231202923>
 7. Karadağ, E., İşçi, S., Öztekin, Ö., & Anar, S. (2016). The relationship between school climate and students' academic achievement: A meta-analysis study. *İnönü University Journal of the Faculty of Education*, 17(2), 107–118. <https://doi.org/10.17679/iuefd.17294446>
 8. Kutsyuruba, B., Klinger, D. A., & Hussain, A. (2015). Relationships among school climate, school safety, and student achievement and well-being: A review of the literature. *Review of Education*, 3(2), 103–135. <https://doi.org/10.1002/rev3.3043>
 9. MacCann, C., Jiang, Y., Brown, L. E. R., Double, K. S., Bucich, M., & Minbashian, A. (2020). Emotional intelligence predicts academic performance: A meta-analysis. *Psychological Bulletin*, 146(2), 150–186. <https://doi.org/10.1037/bul0000219>
 10. Mahoney, J. L., Durlak, J. A., & Weissberg, R. P. (2018). An update on social and emotional learning outcome research. *The Phi Delta Kappan*, 100(4), 18–23. <https://doi.org/10.1177/0031721718815668>
 11. Mavroveli, S., & Sánchez-Ruiz, M. J. (2011). Trait emotional intelligence influences on academic achievement and school behaviour. *British Journal of Educational Psychology*, 81(1), 112–134. <https://doi.org/10.1348/2044-8279.002009>
 12. Mayer, J. D., Salovey, P., & Caruso, D. R. (2004). Emotional intelligence: Theory, findings, and implications. *Psychological Inquiry*, 15(3), 197–215. https://doi.org/10.1207/S15327965PLI1503_02
 13. Mayer, J. D., Roberts, R. D., & Barsade, S. G. (2008). Human abilities: Emotional intelligence. *Annual Review of Psychology*, 59, 507–536. <https://doi.org/10.1146/annurev.psych.59.103006.093646>
 14. Panayiotou, M., Humphrey, N., & Wigelsworth, M. (2019). An empirical basis for linking social and emotional learning to academic performance. *Contemporary Educational Psychology*, 56, 193–204. <https://doi.org/10.1016/j.cedpsych.2019.01.009>
 15. Parker, J. D. A., Creque, R. E., Barnhart, D. L., Harris, J. I., Majeski, S. A., Wood, L. M., Bond, B. J., & Hogan, M. J. (2004). Academic achievement in high school: Does emotional intelligence matter? *Personality and Individual Differences*, 37(7), 1321–1330. <https://doi.org/10.1016/j.paid.2004.01.002>
 16. Qualter, P., Gardner, K. J., Pope, D. J., Hutchinson, J. M., & Whiteley, H. E. (2012). Ability emotional intelligence, trait emotional intelligence, and academic success in British secondary schools: A 5-year longitudinal study. *Learning and Individual Differences*, 22(1), 83–91. <https://doi.org/10.1016/j.lindif.2011.11.007>
 17. Revathy, P., & Kalai Arasi, N. (2021). Need for cognition and trait emotional intelligence in relation to academic achievement of higher secondary students. *MIER Journal of Educational Studies Trends and Practices*, 11(1), 30–48. <https://doi.org/10.52634/mier/2021/v11/i1/1753>

18. Ruiz, L. D., McMahon, S. D., & Jason, L. A. (2018). The role of neighborhood context and school climate in school-level academic achievement. *American Journal of Community Psychology*, 61(3–4), 296–309. <https://doi.org/10.1002/ajcp.12234>
19. Wang, M.-T., & Degol, J. L. (2016). School climate: A review of the construct, measurement, and impact on student outcomes. *Educational Psychology Review*, 28(2), 315–352. <https://doi.org/10.1007/s10648-015-9319-1>
20. Zhao, Y., & Sang, B. (2025). The effect of social–emotional learning programs on elementary and middle school students’ academic achievement: A meta-analytic review. *Behavioral Sciences*, 15(11), 1527. <https://doi.org/10.3390/bs1511527>
21. Zhou, Z., Tavan, H., Kavarizadeh, F., Sarokhani, M., & Sayehmiri, K. (2024). The relationship between emotional intelligence, spiritual intelligence, and student achievement: A systematic review and meta-analysis. *BMC Medical Education*, 24, 217. <https://doi.org/10.1186/s12909-024-05208-5>
22. Zullig, K. J., Collins, R., Ghani, N., Patton, J. M., Huebner, E. S., & Ajamie, J. (2014). Psychometric support of the School Climate Measure in a large, diverse sample of adolescents: A replication and extension. *Journal of School Health*, 84(2), 82–90. <https://doi.org/10.1111/josh.12128>
23. Zullig, K. J., Collins, R., Ghani, N., Patton, J. M., Huebner, E. S., & Ajamie, J. (2015). Preliminary development of a revised version of the School Climate Measure. *Psychological Assessment*, 27(3), 1072–1081. <https://doi.org/10.1037/pas0000070>
24. Anderson, C. S. (1982). The search for school climate: A review of the research. *Review of Educational Research*, 52(3), 368–420. <https://doi.org/10.3102/00346543052003368>
25. Dymnicki, A. B., Weissberg, R. P., & Taylor, R. D. (2011). *The impact of enhancing students’ social and emotional learning: A meta-analysis of school-based universal interventions*. *Child Development*, 82(1), 405–432. <https://doi.org/10.1111/j.1467-8624.2010.01564.x>
26. Awasthi, A., & Yadav, S. S. (2026). स्मार्टफोन उपयोग और स्क्रीन टाइम के संदर्भ में पारंपरिक कौटुंबिक मूल्यों का परिवर्तन: संयुक्त एवं एकल परिवारों में बड़ों के प्रति सम्मान और पारिवारिक संवाद का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/24rcrn30>
27. Ali, M. K., & Kumar, S. (2026). घरेलू हिंसा के मनो-सामाजिक निर्धारक के रूप में लगाव शैली और आधुनिकता की समीक्षा. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/n7424j37>
28. Yadav, S. S. (2026). Gender, family background and occupational choice: An intersectional sociological analysis. *Social Gravity: International Journal of Social Sciences and Humanities*, 1(1). <https://doi.org/10.68219/hff78x12>
29. Gaur, A., & Singh, P. K. (2026). The dual burden: A comparative sociological study of work–life balance among rural and urban women public servants. *International Journal*

- of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1).
<https://doi.org/10.68219/4fp5cd09>
30. Ram, S., & Yadav, S. S. (2026). Digital empowerment or digital divide? A sociological study of social media impact on Dalit women in rural Chandauli. *International Journal of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1).
<https://doi.org/10.68219/51qec648>
31. Khatoon, R. (2026). From scroll to screen: Cultural memory in transition. *International Journal of Humanities, Social Sciences and Development Studies*, 1(1).
<https://doi.org/10.68219/kkdye964>